श्री सोलह कारण भावना का वर्णन

सोलह कारण भावना में प्रथम दर्शन विशुद्धि भावना प्रधान हैं। इसके बिना बाकी भावनाओं का महत्व नहीं रहता हैं। दर्शन विशुद्धि होने पर निश्चय से क्षायिक सम्यक्त प्राप्त होता हैं । क्षायिक सम्यक्त होने पर ही तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता हैं।

1. दर्शन विशुद्धि भावना : इस कोठे में कुल ६८ अर्घ चढ़ाये जाते है। सम्यग्दर्शन के ८ गुण होते हैं। इनके विपरीत ८ दोष, ८ मद, ६ अनायतन व ३ मूढ़ता ये सम्यग्दर्शन के २५ दोष हैं

2. विनय सम्पन्नता : इस कोठे में ५ अर्घ चढ़ाये जाते हैं। इसमें ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, उपचारविनय व तप विनय का वर्णन हैं।

3. शील व्रतेष्वनतीचार : इसमें कुल २५ अर्घ हैं। इसमें शील की रक्षा के लिए नवबाड़ व ५ प्रकार के काम के भेद आदि का वर्णन है।

4. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग : इसमें २० अर्घ हैं। इसमें मति, श्रुत, अवधि, मनः पर्यय व केवलज्ञान आदि का वर्णन हैं। ज्ञानी का आदर करना चाहिये। पुस्तकों व शास्त्रों की विनय करने से ज्ञानवरणी कर्म का क्षय होता हैं व ज्ञान का परिमार्जन होता हैं।

5. संवेग : इसमें २० अर्घ हैं। संसार के चतुर्गति के दुःखों को देखकर भयभीत होना व उनसे बचने का उपाय करना संवेग भावना कहलाती है।

6. त्याग भावना : इसमें १२ अर्घ हैं। औषधि, शास्त्र, अभय व आहार इन चारों प्रकार का दान देना त्याग भावना कहलाती हैं।

7. तप भावना : इसमें १४ अर्घ हैं। इसमें अनशनादि १२ प्रकार के तपो का वर्णन हैं। तपस्या से कर्मों की निर्जरा होती हैं। भाव सहित तप धारण करने से संसार का अंत हो जाता हैं।

8. साधु समाधि : इसमें ८ अर्घ हैं। पुलाक, वकुश, कुशील, निर्ग्रंथ व स्नातक आदि साधुओं की विनय करना साधु समाधि भावना हैं।

9. वैय्यावृत : इसमें ११ अर्घ हैं। सब प्रकार के साधु व श्रावकों की सेवा, वैय्यावृत करना वैयावृत भावना कहलाती हैं।

10. अरहन्त भक्ति : इसमें १३ अर्घ हैं। अष्ट प्रातिहार्य व अनंत चतुष्टय युक्त अरहन्त भगवान की भक्ति करना अरहन्त भक्ति कहलाती हैं।

11. आचार्य भक्ति : इसमें ४३ अर्घ हैं। इसमें आचार्य के ३६ गुणों का वर्णन हैं उनकी भक्ति को आचार्य भक्ति भावना कहते है।

12. बहुश्रुत भावना : इसमें २८ अर्घ हैं। ११ अंग व १४ पूर्व धारी गुरुओं की भक्ति का इसमें वर्णन हैं।

13. प्रवचन भक्ति : इसमें १७ अर्घ है। १४ प्रकीर्णको का इस भावना में वर्णन हैं।

14. आवश्यक परिहाणि : इसमें ७ अर्घ हैं व इसमें श्रावक के छह आवश्यक गुणों का वर्णन हैं।

15. मार्ग प्रभावना : इसमें ११ अर्घ हैं। न्याय, भक्ति, विनय, दान, सतमा, तप आदि से जैन धर्म की प्रभावना करना चाहिये।

16. प्रवचन वात्सल्य : इसमें ११ अर्घ है। शास्त्र की विनय करना, स्वर्ण की स्याही से शास्त्र लिखवाना, जरी के पुट्ठे चढ़ाना। और भी अनेक प्रकार से विनय करने का कथन हैं इससे ज्ञान का क्षयोपशम बढ़ता हैं।